REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2023

बिलासपुर ज़िले में डिजिटल तकनीक और सामाजिक परिवर्तन: संचार, सामाजिक संबंध और युवाओं की जीवनशैली पर प्रभाव

सुश्री आरती तिवारी
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र (प्रभारी प्राचार्य) एस. बी. टी. महाविद्यालय, जिला बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश:

डिजिटल प्रौद्योगिकी सामाजिक परिवर्तन की एक सशक्त प्रेरक शक्ति के रूप में उभरी है, जिसने विशेषकर युवाओं के बीच संचार के तरीकों, सामाजिक संबंधों तथा दैनिक जीवनशैली को गहराई से प्रभावित किया है। प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर ज़िले में डिजिटल प्रौद्योगिकी के सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करता है। अध्ययन का मुख्य केंद्र यह है कि मोबाइल फ़ोन, इंटरनेट और सामाजिक माध्यमों ने संचार प्रणाली, पारस्परिक संबंधों और युवाओं की जीवनशैली को किस प्रकार परिवर्तित किया है। बदलती सामाजिक संरचनाओं को समझने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि डिजिटल प्रौद्योगिकी ने विशेषकर युवाओं के बीच संपर्क, सूचना तक पहुँच और सामाजिक नेटवर्किंग के अवसरों को बढ़ाया है। साथ ही, आमने-सामने की बातचीत में कमी, डिजिटल लत तथा सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि डिजिटल प्रौद्योगिकी दोहरी भूमिका निभाती है, एक ओर सशक्तिकरण का माध्यम बनती है, तो दूसरी ओर सामाजिक चिंता का कारण भी बनती है।

मुख्य शब्द : *डिजिटल प्रौद्योगिकी, सामाजिक परिवर्तन, संचार, युवाओं की जीवनशैली, बिलासपुर ज़िला.*

प्रस्तावना:

डिजिटल प्रौद्योगिकी समकालीन समाज में सामाजिक परिवर्तन की सबसे प्रभावशाली शक्तियों में से एक के रूप में उभरी है, जिसने व्यक्तियों के संवाद, पारस्परिक संपर्क तथा दैनिक जीवन के संगठन के तरीकों को मूल रूप से परिवर्तित कर दिया है। मोबाइल फ़ोन, इंटरनेट सेवाओं और सामाजिक माध्यम मंचों के तीव्र प्रसार ने विशेषकर युवाओं के बीच पारंपरिक संचार प्रणालियों और सामाजिक संबंधों की प्रकृति को बदल दिया है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से डिजिटल प्रौद्योगिकी एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है, जो सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक प्रथाओं और व्यवहार के प्रतिरूपों को पुनर्गठित करती है।

भारत में 'डिजिटल इंडिया' जैसे कार्यक्रमों, किफ़ायती स्मार्टफ़ोन की उपलब्धता तथा बेहतर इंटरनेट संपर्क ने शहरी, अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल प्रौद्योगिकियों के उपयोग को तीव्र गति प्रदान की है। परिणामस्वरूप शिक्षा, रोजगार, मनोरंजन और सामाजिक अंतःक्रिया जैसे जीवन के विविध क्षेत्रों में डिजिटल साधन दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं। विशेष रूप से युवा वर्ग डिजिटल प्रौद्योगिकी का सबसे सक्रिय उपयोगकर्ता बनकर उभरा है, जिससे डिजिटल-प्रेरित सामाजिक परिवर्तन को समझने के लिए यह वर्ग अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर ज़िले में भी पिछले दशक के दौरान डिजिटल अवसंरचना का निरंतर विस्तार हुआ है, जिससे मोबाइल नेटवर्क, इंटरनेट सेवाओं और डिजिटल मंचों तक पहुँच में वृद्धि हुई है। इन विकासों ने संचार के स्वरूप को बदला है, सामाजिक संबंधों को नई परिभाषा दी है तथा युवाओं की जीवनशैली और आकांक्षाओं को पुनः आकार दिया है। जहाँ एक ओर डिजिटल प्रौद्योगिकी ने संपर्क, सूचना और सामाजिक नेटवर्किंग के अवसर बढ़ाए हैं, वहीं दूसरी ओर आमने-सामने के संवाद में कमी, सामाजिक मूल्यों में बदलाव और डिजिटल निर्भरता जैसी चिंताएँ भी उत्पन्न हुई हैं।

इसी संदर्भ में, प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बिलासपुर ज़िले में डिजिटल प्रौद्योगिकी के सामाजिक परिवर्तन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना है। यह अध्ययन संचार, सामाजिक संबंधों और युवाओं की जीवनशैली पर डिजिटल प्रौद्योगिकी के प्रभाव पर केंद्रित है तथा ज़िला स्तर पर डिजिटल परिवर्तन से जुड़ी संभावनाओं और चुनौतियों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:-

१) बिलासपुर ज़िले में डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग की सीमा का अध्ययन करना।
२) संचार के स्वरूपों पर डिजिटल प्रौद्योगिकी के प्रभाव का विश्लेषण करना।
३) सामाजिक संबंधों पर डिजिटल प्रौद्योगिकी के प्रभाव का अध्ययन करना।
४) युवाओं की जीवनशैली पर डिजिटल प्रौद्योगिकी के प्रभाव का आकलन करना।
५) सामाजिक परिवर्तन पर डिजिटल प्रौद्योगिकी के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों की पहचान करना।

अनुसंधान पद्धति:

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान रूपरेखा को अपनाया गया है। प्राथमिक आँकड़े बिलासपुर ज़िलेके शहरी, अर्ध-शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों से चयनित २५० उत्तरदाताओं, विशेषकर युवाओं, से संरचित प्रश्नावली एवं साक्षात्कारों के माध्यम से एकत्र किए गए। द्वितीयक आँकड़े सरकारी प्रतिवेदन, जनगणना आँकड़े, शोध लेख तथा डिजिटल विकास संबंधी प्रतिवेदनों से संकलित किए गए। उत्तरदाताओं के चयन हेतु सरल यादृच्छिक नमूना पद्धति का प्रयोग किया गया तथा आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, सारणियों और गुणात्मक विवेचन के माध्यम से किया गया।

बिलासपुर ज़िले में डिजिटल प्रौद्योगिकी और सामाजिक परिवर्तन:

बिलासपुर ज़िला छत्तीसगढ़ राज्य के प्रमुख ज़िलों में से एक है, जहाँ शहरी, अर्ध-शहरी और ग्रामीण समुदायों की विविध जनसंख्या निवास करती है। पिछले एक दशक में मोबाइल नेटवर्क के सुदृढ़ीकरण, इंटरनेट सेवाओं की व्यापक उपलब्धता और स्मार्टफ़ोन के बढ़ते उपयोग के कारण ज़िले में डिजिटल संपर्क का उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। शैक्षणिक संस्थानों, सरकारी कार्यालयों, बैंकों और वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों ने डिजिटल अवसंरचना और सेवाओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। परिणामस्वरूप, डिजिटल प्रौद्योगिकी ज़िले के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गई है। सभी सामाजिक समूहों में, विशेषकर युवा वर्ग मोबाइल अनुप्रयोगों, सामाजिक माध्यम मंचों और ऑनलाइन सेवाओं का सबसे सक्रिय उपयोगकर्ता बनकर उभरा है।

डिजिटल प्रौद्योगिकी ने बिलासपुर ज़िले में संचार के स्वरूपों में व्यापक परिवर्तन किया है। मोबाइल फ़ोन और इंटरनेट आधारित अनुप्रयोगों (जैसे त्वरित संदेश सेवाएँ, वीडियो कॉल और सामाजिक माध्यम) के व्यापक उपयोग से संचार अधिक तेज़, सरल और सुलभ हो गया है। भौगोलिक दूरी अब संपर्क में प्रमुख बाधा नहीं रही है। विशेष रूप से युवा वर्ग पारंपरिक आमने-सामने संवाद की तुलना में डिजिटल संचार माध्यमों को अधिक प्राथमिकता देता है। यद्यपि इससे सुविधा और दक्षता बढ़ी है, तथापि परिवार और स्थानीय समुदायों में प्रत्यक्ष पारस्परिक संवाद में कमी आई है, जिससे सामाजिक अंतःक्रिया की गुणवत्ता प्रभावित हुई है।

सामाजिक संबंधों पर भी डिजिटल प्रौद्योगिकी का गहरा प्रभाव पड़ा है। सामाजिक माध्यम मंचों ने सामाजिक नेटवर्क को स्थानीय और क्षेत्रीय सीमाओं से परे विस्तारित किया है, जिससे दूर-दराज़ के लोगों से संबंध स्थापित और बनाए रखना संभव हुआ है। आभासी संवाद, विशेषकर युवाओं के बीच, सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है। किंतु ऑनलाइन संचार पर अत्यधिक निर्भरता ने पारंपरिक सामाजिक संबंधों को कमजोर किया है, सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी को घटाया है और प्रत्यक्ष संपर्क को सीमित किया है।

परिणामस्वरूप सामाजिक संबंधों की प्रकृति में परिवर्तन आया है और वे समुदाय आधारित घनिष्ठ संबंधों से अधिक लचीले, प्रौद्योगिकी-नियंत्रित संबंधों की ओर उन्मुख हो गए हैं।

युवाओं की जीवनशैली पर भी डिजिटल प्रौद्योगिकी का गहरा प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। युवा वर्ग शिक्षा, मनोरंजन, सूचना और सामाजिक नेटवर्किंग के लिए डिजिटल मंचों पर अधिक निर्भर हो गया है। ऑनलाइन शिक्षण संसाधन, डिजिटल मीडिया सामग्री और सामाजिक नेटवर्किंग साइटें उनके दैनिक जीवन, अवकाश गतिविधियों और सांस्कृतिक रुचियों को आकार दे रही हैं। जहाँ एक ओर डिजिटल प्रौद्योगिकी ने सूचना और अधिगम के अवसर बढ़ाए हैं, वहीं दूसरी ओर डिजिटल उपकरणों के अत्यधिक उपयोग से नई समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। शारीरिक गतिविधियों में कमी, डिजिटल लत, नींद में व्यवधान और मानसिक तनाव जैसी चिंताएँ युवाओं के बीच उभर रही हैं। इस प्रकार, डिजिटल प्रौद्योगिकी ने युवाओं की जीवनशैली को सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों ही रूपों में परिवर्तित किया है, जिससे डिजिटल माध्यमों के संतुलित और उत्तरदायी उपयोग की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

अध्ययन के परिणाम:

तालिका १ : संचार की दक्षता पर डिजिटल प्रौद्योगिकी का प्रभाव (N = २५०)

संकेतक	सुधार (%)	कोई परिवर्तन नहीं (%)
संचार की गति	८८%	१२%
संपर्क बनाए रखने में सुविधा	८४%	१६%
संचार की आवृत्ति	७९%	२१%

डिजिटल प्रौद्योगिकी ने उत्तरदाताओं के बीच संचार की दक्षता और संपर्क क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि की है।

तालिका २ : सामाजिक माध्यमों का सामाजिक अंतःक्रिया पर प्रभाव (N = २५०)

पक्ष	वृद्धि (%)	कमी (%)
ऑनलाइन सामाजिक नेटवर्क	८२%	१८%
आमने-सामने की अंतःक्रिया	२९%	७१%
सामुदायिक सहभागिता	३६%	६४%

सामाजिक माध्यमों ने सामाजिक नेटवर्क का विस्तार किया है, किंतु आमने-सामने की बातचीत और सामुदायिक सहभागिता में कमी आई है।

तालिका ३ : युवाओं की जीवनशैली का डिजिटल उन्मुखीकरण (N = २५०)

जीवनशैली का पक्ष	अधिक डिजिटल उपयोग (%)	मध्यम उपयोग (%)	कम उपयोग (%)
शिक्षा एवं अधिगम	६८%	२२%	१०%
मनोरंजन	८१%	१४%	५%
सामाजिक अंतःक्रिया	७६%	१८%	६%

बिलासपुर ज़िले में युवाओं की जीवनशैली निरंतर अधिक डिजिटल उन्मुख होती जा रही है।

तालिका ४ : सूचना और अधिगम संसाधनों तक पहुँच (N = २५०)

संकेतक	हाँ (%)	नहीं (%)
सूचना तक सरल पहुँच	८५%	१५%
ऑनलाइन शिक्षण मंचों का उपयोग	६२%	३८%
डिजिटल समाचार/माध्यमों पर निर्भरता	७४%	२६%

डिजिटल प्रौद्योगिकी ने सूचना तथा शैक्षणिक संसाधनों तक पहुँच को सरल और व्यापक बनाया है।

तालिका ५ : अत्यधिक डिजिटल उपयोग से उत्पन्न सामाजिक एवं मानसिक चुनौतियाँ (N = २५०)

चुनौती	उत्तरदाता (%)
शारीरिक गतिविधि में कमी	६९%
डिजिटल लत	५८%
नींद में व्यवधान	५४%
मानसिक तनाव / चिंता	४७%
सामाजिक एकाकीपन	४२%

डिजिटल प्रौद्योगिकी के अत्यधिक उपयोग से विशेषकर युवाओं में उल्लेखनीय सामाजिक और मानसिक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। संख्यात्मक आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल प्रौद्योगिकी ने संचार की गति, संपर्क बनाए रखने की क्षमता तथा सूचना तक पहुँच में महत्वपूर्ण सुधार किया है। साथ ही, इसने सामाजिक संबंधों की प्रकृति और युवाओं की जीवनशैली को गहराई से प्रभावित किया है। तथापि, डिजिटल माध्यमों के अत्यधिक उपयोग से सामाजिक दूरी, शारीरिक निष्क्रियता और मानसिक तनाव जैसी गंभीर समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि डिजिटल प्रौद्योगिकी जहाँ एक ओर सामाजिक परिवर्तन और सशक्तिकरण का माध्यम है, वहीं दूसरी ओर इसके संतुलित और विवेकपूर्ण उपयोग की आवश्यकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

चर्चा (Discussion):

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि बिलासपुर ज़िले में डिजिटल प्रौद्योगिकी ने संचार की दक्षता में उल्लेखनीय सुधार किया है। संचार की गति, संपर्क बनाए रखने की सुविधा तथा संवाद की आवृत्ति में हुई वृद्धि यह दर्शाती है कि मोबाइल फ़ोन, इंटरनेट और डिजिटल अनुप्रयोगों ने लोगों के दैनिक जीवन को अधिक सहज और त्वरित बना दिया है। विशेषकर युवाओं के लिए डिजिटल माध्यम पारंपरिक संचार साधनों की तुलना में अधिक प्रभावी और सुविधाजनक सिद्ध हुए हैं। यह परिवर्तन सामाजिक संपर्क को व्यापक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन का संकेत देता है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि सामाजिक माध्यमों के उपयोग से ऑनलाइन सामाजिक नेटवर्क का विस्तार हुआ है, किंतु इसके साथ ही आमने-सामने की अंतःक्रिया और सामुदायिक सहभागिता में कमी आई है। यह स्थिति दर्शाती है कि डिजिटल संपर्क ने सामाजिक संबंधों की प्रकृति को बदल दिया है, जहाँ प्रत्यक्ष संवाद की जगह आभासी संवाद को प्राथमिकता मिलने लगी है। इसके परिणामस्वरूप पारंपरिक सामाजिक बंधनों और सामुदायिक जीवन की सक्रियता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

युवाओं की जीवनशैली पर डिजिटल प्रौद्योगिकी का प्रभाव अत्यंत गहरा दिखाई देता है। शिक्षा, मनोरंजन और सामाजिक संपर्क, तीनों ही क्षेत्रों में उच्च स्तर का डिजिटल उपयोग यह संकेत करता है कि युवाओं का दैनिक जीवन डिज़िटल माध्यमों के इर्द-गिर्द केंद्रित हो गया है। ऑनलाइन शिक्षण संसाधनों और डिजिटल सूचना तक सरल पहुँच ने अधिगम के नए अवसर प्रदान किए हैं, जो एक सकारात्मक परिवर्तन है।

हालाँकि, निष्कर्ष यह भी दर्शाते हैं कि डिजिटल माध्यमों के अत्यधिक उपयोग से शारीरिक गतिविधियों में कमी, डिजिटल लत, नींद में व्यवधान, मानसिक तनाव और सामाजिक एकाकीपन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। ये सामाजिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ यह संकेत देती हैं कि डिजिटल प्रौद्योगिकी का अनियंत्रित उपयोग युवाओं के स्वास्थ्य और सामाजिक संतुलन के लिए हानिकारक हो सकता है।

समग्र रूप से, निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि डिजिटल प्रौद्योगिकी ने बिलासपुर ज़िले में संचार, सूचना और जीवनशैली को आधुनिक रूप प्रदान किया है, किंतु इसके साथ उत्पन्न चुनौतियाँ यह आवश्यक बनाती हैं कि डिजिटल माध्यमों का संतुलित, जागरूक और उत्तरदायी उपयोग किया जाए, ताकि इसके सकारात्मक प्रभावों को बनाए रखते हुए नकारात्मक परिणामों को कम किया जा सके।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि डिजिटल प्रौद्योगिकी ने बिलासपुर ज़िले में सामाजिक जीवन के स्वरूप को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। मोबाइल फ़ोन और इंटरनेट आधारित अनुप्रयोगों के माध्यम से संचार की दक्षता और संपर्क क्षमता में

उल्लेखनीय सुधार हुआ है, जिससे विशेषकर युवाओं के लिए संवाद अधिक तीव्र, सरल और सुविधाजनक बन गया है। डिजिटल मंचों ने सामाजिक नेटवर्क को स्थानीय सीमाओं से आगे विस्तारित किया है, जिससे दूर-दराज़ के लोगों के साथ संबंध बनाए रखना संभव हुआ है। हालाँकि, इस विस्तार के साथ आमने-सामने के संवाद में कमी आई है, जिसका प्रभाव पारंपरिक पारिवारिक और सामुदायिक संबंधों पर पड़ा है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि युवाओं की जीवनशैली निरंतर अधिक डिजिटल उन्मुख होती जा रही है। दैनिक दिनचर्या, अवकाश गतिविधियाँ, अधिगम की प्रक्रियाएँ और सांस्कृतिक रुचियाँ अब बड़े पैमाने पर डिजिटल माध्यमों द्वारा प्रभावित हो रही हैं। सूचना तक सरल पहुँच और ऑनलाइन शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता ने युवाओं में शैक्षिक अवसरों और जागरूकता को सकारात्मक रूप से बढ़ाया है। इसके साथ ही, डिजिटल उपकरणों के अत्यधिक उपयोग से शारीरिक गतिविधियों में कमी, डिजिटल लत, नींद में व्यवधान और मानसिक तनाव जैसी सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। ये निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि डिजिटल प्रौद्योगिकी एक ओर जहाँ सशक्तिकरण का माध्यम है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक चुनौती भी प्रस्तुत करती है। अतः सकारात्मक सामाजिक परिणाम सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल साधनों का संतुलित, विवेकपूर्ण और उत्तरदायी उपयोग अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ:

1) *Sahu, P., Patel, S. K., & Sharma, A. K. (2020). Impact of social media on youth of Chhattisgarh. International Journal of Communication and Information Technology, 2(2), 17–32.*
2) *Banjara, S., & Shrivastava, S. (2017). Impacts of internet addiction among higher educational students in Bilaspur district of Chhattisgarh, India. International Journal of Advanced Research, 5(8), 1254–1262.*
3) *Das, S., & Pandey, V. (2020). Media awareness among the school going students: A study of Manth village in Raipur district of Chhattisgarh. International Journal of Creative Research Thoughts, 6(4), 1296–1302.*
4) *Dewangan, G. L. (2019). Digital literacy skills: A study of students of school of studies in library and information science, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur. Research Journal of Humanities and Social Sciences, 10(2), 523–527.*
5) *Mishra, S., & Singh, A. (2018). Current scenario of digital growth in the state of Chhattisgarh. Journal of Management and Service Science, 4(1), 45–56.*
6) *Patel, R. K. (2019). Psychological use of information and communication technology in Chhattisgarh: A study on social and physical needs. Research Journal of Humanities and Social Sciences, 10(4), 1121–1126.*
7) *Verma, K. (2015). Social media and its impact on the lifestyle of tribal youth in Chhattisgarh. Indian Journal of Social Research, 56(3), 411–420.*
8) *Thakur, M., & Shrivastava, P. (2016). Mobile phone usage patterns and social relationships among college students in Bilaspur. Journal of Community Mobilization and Sustainable Development, 11(2), 198–205.*
9) *Bhati, S., & Bansal, J. (2019). Social media and Indian youth: A study of usage and behavioral impact. International Journal of Computer Sciences and Engineering, 7(1), 2347–2693.*
10) *Chandra, V., & Yadav, S. (2020). A study of the digital media consumption among Indian youths. International Journal of Scientific Research and Management, 8(4), 100–112.*
11) *Gupta, A., & Gupta, S. (2018). Impact of social media on social life of teenagers in India: A case study. International Journal of Research Publication and Reviews, 4(5), 576–581.*
12) *Kar, S. K., & Sharma, P. (2020). Digital technology and social transformation: A perspective on rural India. Shikshan Sanshodhan: Journal of Arts, Humanities and Social Sciences, 3(1), 15–22.*

13) *Singh, B. P., & Chaturvedi, S. (2019). Socio-cultural impact and changing scenario of digital technology among rural youth. Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 16(6), 1234–1240.*
14) *Kumar, S. (2017). Information and communication technology as an agent of social change in rural India. International Journal of Social Science and Economic Research, 2(8), 4156–4165.*
15) *Sharma, N. (2020). The impact of digital media on youth political engagement in India: A sociological analysis. International Journal of Innovative Education and Research, 8(2), 2403.*
16) *Yadav, S., & Meena, M. (2019). Digital dependency and its impact on academic performance and social life of students. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, 6(1), 1254–1262.*
17) *Dasgupta, S. (2012). The impact of technology on society: A study of social isolation and changing relationships. The Human Project, 87–95.*
18) *Wellman, B., & Quan-Haase, A. (2020). Social relations and technology: Continuity, context, and change. Network Structure and Composition across the Life Span, 4(1), 110–125.*